3 एम्स के डॉ. सुनील चौहान एपीपीआईकॉन

4 प्रियंका गांधी ने किया संसद में दमदार प्रवेश

5 जयंत नाहटा ने बदली तकदीर और तस्वीर

RNI-MPBIL/2011/39805

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 15 अंक : 32 प्रति सोमवार, 16 दिसंबर 2024 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का पहला साल हैं बेमिसाल

कवर स्टोरी

-विजया पाठक
एडिटर

...पर प्रदेश के गृहमंत्री विजय शर्मा की अवैध वसूली और गुंडागर्दी से साय सरकार की हो रही फजीहत, केंद्र सरकार ने भी जताई आपत्ति

विजय शर्मा को जल्द ही किया जा सकता है मंत्री पद से बेदखल

छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय के नेतृत्व वाली सरकार ने पिछले दिनों अपनी सरकार के एक वर्ष का कार्यकाल पूरा किया। खास बात यह है कि इस एक वर्ष के कार्यकाल में विष्णुदेव साय ने न सिर्फ किसी एक वर्ग को बल्कि समाज के हर वर्ग के लिये जनहित की योजनाएं लागू कि और उन्हें शासकीय योजनाओं का लाभ दिलाने के लिये योजनाबद्ध ढंग से कार्य भी किया। लेकिन एक कहावत है कि एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है। साय कैबिनेट के प्रमुख मंत्री और प्रदेश के गृहमंत्री पद पर विराजे विजय शर्मा की उदासीन कार्यशैली और उजाड़ रवैये ने प्रदेश सरकार की छवि को धूमिल करने में कहीं से कहीं तक कोई कसर नहीं छोड़ी। एक तरफ जहां विष्णुदेव साय लगातार जनकल्याण की दिशा में कार्य करने के लिये योजनाएं बना रहे हैं वहीं, दूसरी तरफ विजय शर्मा की गृहमंत्रालय का गलत फायदा उठाते हुए बेधड़क ट्रांसफर, वसूली, गुंडागर्दी जैसे हत्थकंडों को अपनाकर राज्य सरकार की नाक में दम कर रखा है। आश्चर्य करने वाली बात यह है कि विजय शर्मा की दिन प्रतिदिन बढ़ती इन हरकतों का खामियाजा पूरी प्रदेश सरकार को भुगतना पड़ रहा है और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय चाहते हुए भी विजय शर्मा को रोक नहीं पा रहे हैं। विस्तृत कवर स्टोरी पेज 2 पर...

मध्यप्रदेश में मोहन सरकार के कार्यकाल का एक साल

कामकाज बेहतर, लेकिन कर्ज के भरोसे चल रही मोहन सरकार

-विजया पाठक

मध्यप्रदेश की डॉ. मोहन यादव सरकार का एक साल का कार्यकाल 13 दिसंबर को पूरा हो गया। अब भारतीय जनता पार्टी इस एक साल को 'स्वर्णिम कार्यकाल' बता कर अपनी पीठ खुद ही थपथपा रही है। लेकिन देखने में लग रहा है कि मोहन सरकार भी पूर्ववर्ती शिवराज सरकार की भांति कर्ज पर चल रही है। सरकार पर बजट से ज्यादा कर्ज लद गया है। जिसका ही नतीजा है कि आज प्रदेश में ब्याज पर ही हजारों करोड़ रुपये अदा किये जा रहे है। पिछले कुछ महीनों से देखा जा रहा है कि सरकार ने ऐसा कोई सा महीना नहीं छोड़ा जब कर्ज न लिया हो। आय से ज्यादा राज्य में खर्च है। कर्ज का बोझ बढ़ा है। लगातार कर्ज लेने का नतीजा यह है कि बजट से ज्यादा कर्ज हो गया है। कर्ज का बोझ कम करने के उपाय खोजे जा रहे हैं। सरकार में फिजूलखर्ची पर रोक लगाई गई है, लेकिन सकारात्मक परिणाम नहीं दिख रहे। इस एक साल में मोहन सरकार ने भले ही कई उपलब्धियां हासिल की हो, अनेक क्षेत्रों में सरकार ने प्रगति की है लेकिन सवाल वहीं है कि सरकार कर्ज के भरोसे कब तक चलेगी। डॉ. मोहन यादव ने जब सत्ता संभाली थी, तब बजट से ज्यादा कर्ज का बोझ था। एक साल में सरकार ने खजाने की स्थिति में सुधार के प्रयास किए। स्थिति सुधरी भी, लेकिन कर्ज का बोझ बढ़ा है। यह 3.77 लाख करोड़ तक जा पहुंचा है। सप्लीमेंट्री बजट तक के हालात हो गए हैं। ज्ञात रहे कि 2024-25 के लिए करीब 5.65 लाख करोड़ का बजट पेश किया गया था। यह बीते वर्षों की तुलना में करीब 16% ज्यादा था। बढ़ता कर्ज आर्थिक सेहत सुधारने के प्रयास में नाकाफी है। यादव जब मुख्यमंत्री बने तो उन्हें विरासत में कई लाख करोड़ का कर्ज मिला। मध्य प्रदेश पर 3.85 लाख करोड़ रुपये का कर्ज है। यह उनके लिए बड़ी चुनौती है। औद्योगिकीकरण और शहरी विकास से पैसा तो आएगा लेकिन इसमें समय लगेगा।

इसके साथ ही प्रदेश का विपक्ष भी सरकार पर हमलावर है। विपक्षी पार्टी कांग्रेस इसे 'विफलताओं से भरा साल' करार देकर सरकार पर आरोप लगा रही है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 1 साल के कार्यकाल पर संतोष जताते हुए कहा, "सरकार ने गरीब, किसान, युवा, महिलाओं और सभी वर्ग के लोगों के लिए काफी कार्य किए हैं। (शेष पेज 2 पर)

छत्तीसगढ़ के गृहमंत्री विजय शर्मा की अवैध वसूली और गुंडागर्दी से साय सरकार की हो रही फजीहत, जल्द ही किया जा सकता हैं मंत्री पद से बेदखल

(पेज 1 से जारी)

मुख्यमंत्री की छवि धूमिल करने में जुटे शर्मा

सूत्रों की मानें तो प्रदेश के गृहमंत्री विजय शर्मा ने मुख्यमंत्री के नाम पर सरकार के एक वर्ष पूरे होने पर प्रदेश के आला पुलिस अफसरों प्रमुख थानों के प्रभारियों से अवैध वसूली करने के निर्देश दिये। यही नहीं गृहमंत्री साहब ने तो यहां तक अफसरों को कह दिया कि अगर वे समय पर अवैध वसूली का पैसा लाने में विफल हुए तो अंजाम बहुत बुरा होगा। ऐसे में अफसर हो या फिर अन्य अधिकारी सभी एक दूसरे के चेहरे की तरफ देख चुपचाप बैठे हुए है। अगर विजय शर्मा की अवैध वसूली का सिलसिला आगे यु हीं चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब साय सरकार की बदनामी जनता तक होने में समय नहीं लगेगा।

केंद्रीय नेतृत्व तक पहुंच चुकी है शर्मा की शिकायत

विशेषज्ञों की मानें तो गृहमंत्री एक बेहद संवेदनशील पद है। लेकिन विजय शर्मा जैसे नेता इस पद की गंभीरता को नजरअंदाज करते हुए जिस ढंग से कार्य कर रहे हैं उसको देखते हुए केंद्रीय नेतृत्व तक इसकी शिकायत पहुंच चुकी है। शर्मा की इस कार्यशैली और मनमानी पर केंद्रीय नेतृत्व ने भी खासी नाराजगी व्यक्त की और मुख्यमंत्री साय को विजय शर्मा को नियंत्रण में करने के निर्देश दिये है। चर्चा इस बात की भी है कि अगर समय रहते विजय शर्मा ने अपनी कार्यशैली में कोई सुधार नहीं किया तो वह दिन दूर नहीं जब उन्हें पार्टी मंत्री पद से बेदखल कर देगी।

राज्य में अनियंत्रित हो गया है अपराध

विशेषज्ञों के अनुसार मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बेहद गंभीर और संवेदनशील व्यक्ति हैं। यही कारण है कि वे लगातार जनहित के कार्यों में व्यस्त रहते हैं और जनकल्याण उनके जीवन की प्राथमिकता है। पिछले एक वर्ष में राज्य में विविध क्षेत्रों में जहां अभूतपूर्व प्रगति की है वहीं प्रदेश की कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है। नक्सल अपराध से लेकर चोरी, बालात्कार, छेड़छाड़, अवैध वसूली, धमकी, जुंआ, सट्टा जैसे तमाम अपराध राज्य में तेज गति से बढ़े जिसे रोकने में विजय शर्मा व उनका गृह मंत्रालय पूरी तरह से नाकाम रहा है।

पूर्व मुख्यमंत्री ने ली विजय शर्मा की चुटकी

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने राज्य सरकार के गृहमंत्री विजय शर्मा द्वारा वर्ष भर में कानून व्यवस्था पर नियंत्रण न कर पाने पर चुटकी लेते हुए कहा कि प्रदेश में लॉ एंड आर्डर की हालात बहुत बिगड़ चुकी है। बघेल ने ऑनलाइन सट्टा एप को लेकर भी सरकार को निशाने पर लिया। बघेल ने कहा कि केंद्र और राज्य दोनों जगहों पर अब बीजेपी की सरकार है। केंद्र और राज्य को चाहिए कि मिलकर ऑनलाइन सट्टा एप के खिलाफ एक्शन लें। बघेल ने कहा कि सरकार की मंशा पर उनको शक है। सरकार जान बूझकर कानूनी कार्रवाई करने से बच रही है।

पुलिस का भय जरा भी नहीं बचा है

प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि रोज हत्याएं हो रही, गोलियां चल रही, रायपुर में यह क्या हो रहा है। चार दिन में नौ हत्या, जेल के बाहर सरेआम गोलीबारी कब जागेगी सरकार? अपराधियों के हौसले बुलंद है कि प्रदेश के सबसे संवेदनशील माने जाने वाले सेंट्रल जेल के बाहर दिन दहाड़े एक व्यक्ति को गोली मार दी गई। अपराधिक तत्व इतने बेखौफ हो गए हैं कि उनमें पुलिस का भय जरा भी नहीं बचा है। शुक्ला ने कहा कि राजधानी में भाजयुमो के नेता, उसके साथी को चाकू मारकर लूट लिया गया। प्रदेश में जब से भाजपा की सरकार बनी है राजधानी में सरेआम गोलीबारी की पांचवी घटना हुई है। सरकार की नाकामी और पुलिस की लापरवाही का परिणाम है कि प्रदेश की राजधानी असुरक्षित हो चुकी है। दीपावली के दौरान चार दिनों में राजधानी में नौ हत्या हुई, प्रदेश के लगभग सभी शहरों में रोज ही हत्याएं हो रही है।

इन घोटालों पर साय सरकार ने दिखाई सख्ती

शराब घोटाला- वर्ष 2019 से 2022 तक 2,161 करोड़ के कथित शराब घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय ने कार्रवाई कर कईयों को सलाखों के पीछे भेज दिया है।

डीएमएफ घोटाला- जिला खनिज न्यास मद घोटाले के मामले में दोषी को उनकी कारगुजारियों को जेल में डाला जा चुका है।

सीजीपीएससी भर्ती घोटाला- राज्य सेवा परीक्षा में व्यापक स्तर पर हुई गड़बड़ियों पर सीबीआइ जांच चल रही है। जांच कराई।

कोयला घोटाला- कोयला परिवहन पर 25 रुपये की अवैध उगाही कर 540 करोड़ रुपये कोयला घोटाले में भी प्रवर्तन निदेशालय ने नौकरशाहों, व्यापारियों, राजनेताओं और बिचौलियों को जेल भेज दिया।

आरटीई घोटाला- शिक्षा के अधिकार अधिनियम यानी आरटीई में भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारियों पर एफआइआर के निर्देश दिए गए हैं।

जमीन घोटाला- जमीन खरीदी-बिक्री में व्याप्त अनियमितताओं और धोखाधड़ी पर जांच चल रही है। इसे रोकने के लिए सुगम एप लांच किया है।

कामकाज बेहतर, लेकिन कर्ज के भरोसे चल रही मोहन सरकार

(पेज 1 से जारी)

उन्होंने सिंचाई परियोजना रोजगार, लाडली बहना, लाड़ली लक्ष्मी सहित कई योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सरकार ने महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए योजनाओं को आगे बढ़ाया है। इसके अलावा, 26 जनवरी तक सरकार 'मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान' भी चल रही है, जिसके तहत 70 योजनाओं का लाभ लोगों को निशुल्क दिया जा रहा है।

कांग्रेस ने लगाया वादे पूरे न करने का आरोप

सरकार 1 साल का कार्यकाल पूरा होने पर जश्न मना रही है, दूसरी तरफ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने इस 1 साल में सरकार द्वारा वादे पूरे नहीं किए जाने के आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को 1 साल पूरा हो गया, मगर लाडली बहनों को 3,000 रुपये की राशि नहीं मिल पा रही है। इसके अतिरिक्त बेरोजगारी, अपराध और सरकारी योजनाओं में लापरवाही को लेकर उमंग सिंघार ने मोहन यादव सरकार पर आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि विद्यार्थियों को स्कूटी देने का वादा किया गया था, यह वादा भी पूरा नहीं हुआ। खासतौर पर मुख्यमंत्री के शहर उज्जैन में भी वादे को पूरा नहीं किया गया है।

खाद की किल्लत से परेशान किसान- विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने आरोप लगाया कि उन्होंने रीवा, सतना और सिंगरौली का दौरा किया था जहां खाद की कमी की वजह से 60% किसानों ने अपनी फसल भी नहीं बोई। इस प्रकार की दिक्कतों का सामना किसानों को करना पड़ रहा है। मध्य प्रदेश में खाद की कमी की वजह से किसानों की आमदनी में भी काफी असर पड़ा है।

चालू वित्तीय वर्ष में कब-कब लिया कर्ज

27 नवंबर- 2500 करोड़ का कर्ज 20 साल के लिए, 2055 करोड़ का कर्ज 14 साल के लिए।

9 अक्टूबर- 2500 करोड़ का कर्ज 11 साल के लिए, 2500 करोड़ का कर्ज 19 साल के लिए।

25 सितंबर- 2500 करोड़ का कर्ज 12 साल के लिए, 2500 करोड़ का कर्ज 19 साल के लिए।

28 अगस्त- 2500 करोड़ का कर्ज 14 साल के लिए,, 2500 करोड़ का कर्ज 21 साल के लिए।

और 28 अगस्त को ही 2500 करोड़ का कर्ज 11 साल के लिए।

इसके पहले के महीनों में भी सरकार ने कर्ज लिया है।

फिलहाल ये है खजाने की स्थिति

बाजार से कर्ज 2,34,812.63 करोड़।

अन्य बॉन्ड 5888.44 करोड़।

19,195.00 की अन्य देनदारी।

15,246.01 करोड़ रुपए वित्तीय संस्थाओं से कर्ज।

38421.73 करोड़ रुपए राष्ट्रीय बचत फंड।

62012.72 करोड़ का कर्ज तथा केंद्र सरकार से ली गई एडवांस राशि।

मोहन सरकार की बड़ी चुनौतियां

नर्सिंग घोटाला- नर्सिंग घोटाले के बाद नर्सिंग शिक्षा पर लगा कलंक मिटाना। कॉलेज कम हुए। परीक्षाएं समय पर नहीं हो सकीं। हालांकि अब परीक्षाएं शुरू हुई हैं। परीक्षाएं न होने से नर्सिंग स्टाफ कम हुआ है। कोर्ट की निगरानी में जांच जारी है। कई कॉलेजों की मान्यता समाप्त हो चुकी है। घोटाले को लेकर छात्र संगठन भी मुखर हैं।

प्रमोशन का नहीं निकला रास्ता- वर्ष 2016 से राज्य के अधिकारी और कर्मचारियों का प्रमोशन नहीं हो रहा। हाईकोर्ट ने पदोन्नति नियम निरस्त कर दिए हैं। सरकार के इस दिशा में प्रयास नाकाफी रहे। प्रमोशन का इंतजार करते-करते एक लाख से ज्यादा कर्मचारी रिटायर हो गए, लेकिन प्रमोशन का रास्ता नहीं निकला। इससे कर्मी नाराज हैं।

नियुक्तियों का वादा- मोहन सरकार ने एक लाख पदों पर नियुक्तियों का वादा किया है, प्रक्रिया दिसंबर तक शुरू होनी थी, लेकिन ज्यादातर विभागों में कागजी घोड़े ही दौड़ रहे हैं। खाली पदों की जानकारी भी नहीं भेज पाए हैं। विभागों में नियुक्तियां न होने से होने युवा ओवरएज हो रहे हैं। युवा आंदोलनरत भी हैं।

बजट से ज्यादा कर्ज- आय से ज्यादा राज्य में खर्च है। कर्ज का बोझ बढ़ा है। लगातार कर्ज लेने का नतीजा यह है कि बजट से ज्यादा कर्ज हो गया है। कर्ज का बोझ कम करने के उपाय खोजे जा रहे हैं। सरकार में फिजूलखर्ची पर रोक लगाई गई है, लेकिन सकारात्मक परिणाम नहीं दिख रहे।

अपराध ने बढ़ाई चिंता- राज्य में बढ़ते अपराध बड़ी चुनौती हैं। अपराधों के नए तरीके आने से लोग चिंतित हैं। साइबर क्राइम भी चुनौती है। इससे निपटने के लिए सरकार प्रयास कर रही है, लेकिन पुख्ता इंतजाम नहीं हो पाए हैं। लोगों को जागरूक किया जा रहा है। विपक्षी दल कांग्रेस इसको लेकर सरकार की लगातार घेराबंदी कर रही है।

बढ़ता प्रदूषण- शहरों में बढ़ता प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए खतरे की घंटी है। चिंता यह है कि यदि प्रदूषण इसी तरह बढ़ता रहा तो कहीं दिल्ली जैसी हालत न बन जाएं, उसे रोकना किसी चुनौती से कम नहीं। प्रदूषण रोकने के लिए बजट में लगातार प्रावधान किया जा रह है, लेकिन धरातल पर यह नजर नहीं आता।

चिकित्सा, शिक्षा और रोजगार की चुनौती- मध्य प्रदेश में चिकित्सा शिक्षा की कमी भी एक चुनौती है। उत्तर प्रदेश और राजस्थान में लगभग हर जिले में मेडिकल कॉलेज है। मध्य प्रदेश में सिर्फ 1 7 सरकारी मेडिकल कॉलेज हैं। इसी तरह सरकार ने अपने संकल्प पत्र में 2.5 लाख सरकारी नौकरियों का वादा किया था। लेकिन अभी तक विज्ञापनों के अलावा इसके लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं।

उज्जैन को लेकर निशाने पर डॉ. मोहन यादव

सीएम मोहन यादव पर पहला आरोप लगा कि वो अपने गृहनहर उज्जैन पर ज्यादा ध्यान देते हैं, पूरे प्रदेश पर कम। वो उज्जैन में ज्यादा समय बिताते थे। वहां कई कार्यक्रमों में जाते थे। पहला क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलन उज्जैन में हुआ। अमूमन उज्जैन में बड़े विकास कार्य सिंहस्थ के दौरान होते थे, लेकिन पहली बार सिंहस्थ से पहले ही छह हजार करोड़ के विकास कार्य हो रहे हैं। अभी हाल ही में प्रदेश के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने भी उज्जैन में बन रही सड़कों को लेकर सवाल उठाये थे। शिप्रा को प्रदूषण से मुक्ति व सिंहस्थ क्षेत्र में स्थायी निर्माण कर स्प्रिचुल सिटी के रूप में विकसित करने का निर्णय धार्मिक नगरी को नए आयाम दे रही है। इसके अलावा भी कई प्रोजेक्ट उज्जैन में चल रहे हैं। सियासी लोग कहते हैं कि मोहन यादव उज्जैन पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

क्या सियासी मोर्चे पर सफल माना जायेगा सीएम मोहन का कार्यकाल?

मुख्यमंत्री मोहन यादव राजनीतिक मोर्चे पर सफल माने जा सकते हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में सभी 29 लोकसभा सीटों पर जीत हासिल कर राजनीतिक पंडितों को हैरान कर दिया। कांग्रेस के देश में सबसे मजबूत गढ़ों में शामिल रही छिंदवाड़ा सीट पर भी 26 साल बाद जीत दर्ज की। इससे पहले अमरवाड़ा विधानसभा उपचुनाव में जीत से पार्टी में अपना कद बता चुके थे। जहां भाजपा के सभी बड़े नेता राम पर फोकस करते रहे, वहीं मोहन यादव ने कृष्ण भक्त और उज्जैन से खुद को जोड़कर अलग छवि बनाई। वे कृष्ण जन्मभूमि की बात करते रहे तो जन्माष्टमी का आयोजन सरकारी स्तर पर कर अपनी छवि को और बेहतर किया। भाजपा ने उत्तर प्रदेश और बिहार के चुनावों में भी उन्हें स्टार प्रचारक के रूप में काम लेकर उनका बढ़ता कद बता दिया था। हालांकि आखिरी दो उपचुनाव में से विजयपुर में मंत्री की हार हुई। इसमें स्थानीय कारण भी ज्यादा रहे। वहीं मोहन यादव ने जनता के बीच छवि भाई के रूप में गढ़ी।

सत्ता और भाजपा संगठन के बीच बेहतर तालमेल देखा गया है। जमीनी स्तर पर सरकार की योजनाओं और छवि को बेहतर बनाने में संगठन के पदाधिकारी बूथ से लेकर शक्ति केंद्रों तक पहुंचे। लोगों तक पहुंचने के लिए बूथ भाजपा की सबसे छोटी इकाई है। यहां संगठनात्मक कामों ने सरकार के पहले वर्ष को नई ऊर्जा दी।

एम्स भोपाल के डॉ. सुनील चौहान ने एपीपीआईकॉन-2024 में न्यूरोफिजियोलॉजी में अपने उत्कृष्ट योगदान से संस्थान का मान बढ़ाया

-अर्चना शर्मा

जगत प्रवाह. भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में फिजियोलॉजी विभाग के एडिशनल प्रोफेसर डॉ. सुनील चौहान ने एपीपीआईकॉन- 2024 सम्मेलन में अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज कराई। यह सम्मेलन चेन्नई स्थित ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में आयोजित किया गया था। डॉ. चौहान ने सम्मेलन में दोहरी भूमिका निभाई—फैकल्टी सदस्य और प्रस्तुतकर्ता के रूप में। उन्होंने सम्मेलन में एच रिफ्लेक्स और रिपीटेटिव नर्व स्टिमुलेशन (आरएनएस) जैसे महत्वपूर्ण न्यूरोफिजियोलॉजिकल तकनीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए। एच-रिफ्लेक्स एक तकनीक है जिसका उपयोग रीढ़ की हड्डी के कार्यात्मकता का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह विशेष रूप से संवेदी और मोटर मार्गों के आकलन में मददगार है। इस प्रक्रिया में एक परिधीय तंत्रिका को स्टिमुलेट किया जाता है और उसके परिणामस्वरूप मांसपेशी प्रतिक्रिया को मापा जाता है, जिससे तंत्रिका तंत्र की सेहत के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। रेपेटिटिव स्टिमुलेशन टेस्ट का उपयोग आमतौर पर म्यास्थेनिया ग्रेविस जैसे न्यूरोमस्कुलर जंक्शन विकारों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह परीक्षण यह समझने में मदद करता है कि बार-बार की तंत्रिका स्टिमुलेशन के दौरान तंत्रिका संकेत मांसपेशियों तक कितनी प्रभावी ढंग से पहुंचते हैं। इस सम्मेलन का उद्घाटन तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री ने किया और इसमें भारत व विदेशों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने भाग लिया। डॉ. चौहान के योगदान पर प्रकाश डालते हुए, प्रो. सिंह ने कहा, "एपीपीआईकॉन-2024 जैसे प्रतिष्ठित सम्मेलनों में भागीदारी एम्स भोपाल की चिकित्सा ज्ञान और रोगी देखभाल को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। डॉ. सुनील चौहान के द्वारा किए गए प्रशिक्षण और शोध प्रस्तुतियाँ संस्थान की शैक्षणिक उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति समर्पण को उजागर करती हैं। उनका कार्य न केवल न्यूरोफिजियोलॉजी के मानकों को ऊंचा उठाता है, बल्कि दूसरों को भी वैज्ञानिक अनुसंधान और नैदानिक उत्कृष्टता की ओर प्रेरित करता है।" एपीपीआईकॉन-2024 अकादमिक चर्चा, पेशेवर नेटवर्किंग और न्यूरोफिजियोलॉजी में नवीनतम प्रगति साझा करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच साबित हुआ। (जगत फीचर्स)

सभी अधिकारी सुनिश्चित करें जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचेः कलेक्टर

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। जिले में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए। उक्त निर्देश कलेक्टर ने समय सीमा बैठक के दौरान अधिकारियों को दिये। कलेक्टर ने सभी नगर पालिका अधिकारी एवं जनपद पंचायत के सीइओ को निर्देशित किया कि वे अभियान के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में व्यापक जनसंपर्क अभियान चलाएं। प्रत्येक गांव, मोहल्ले और कॉलोनी में जाकर लोगों को शासन की विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूक करें। इसके साथ ही, हित ग्राहियों के आवेदन फॉर्म भी इस दौरान प्राप्त किये जायें। अभियान के दौरान विशेष शिविरों का आयोजन भी किया जाए तथा इन शिविरों में संबंधित विभागों के अधिकारी/कर्मचारी मौजूद रह कर लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान का प्रयास करें। साथ ही, पात्र हितग्राहियों के आवेदन फॉर्मों की जांच और स्वीकृति प्रक्रिया को तेजी से किया जाए। कलेक्टर ने कहा कि राज्य सरकार के इस अभियान का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे इस अभियान को पूरी गंभीरता से लें और इसे सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत करें। बैठक में उपस्थित सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया गया है कि वे विभागीय योजनाओं की नियमित रूप से मॉनिटरिंग करें और प्राप्त आवेदनों का समय पर निराकरण सुनिश्चित करें।कलेक्टर सोनिया मीना ने बैठक के दौरान जिले के सभी विभागीय प्रमुखों को निर्देशित किया है कि वे धरती आबा अभियान के तहत चिन्हित 83 ग्रामों में मूलभूत सुविधाओं के विकास के लिए तत्काल कार्यवाही करें। (जगत फीचर्स)

तुम्हारा मौन कहीं पैदा न कर दे गाडरवारा में दुर्लभ कश्यप..!

-बद्रीप्रसाद कौरव

जगत प्रवाह. नरसिंहपुर। दुर्लभ कश्यप और उसके कारनामों से कांपने वाला उज्जैन शहर और समूचा मध्यप्रदेश आज भी दुर्लभ कश्यप के नाम थरथराता है। दुर्लभ का अंत तो 2020 में ही हो गया लेकिन गाडरवारा शहर में बीते दिनों हुए मधुर चौरसिया नृशंस हत्याकांड ने शहर में दहशत का माहौल खड़ा कर दिया है। बढ़ते अपराध में शहर के लोगों की बढ़ती चुप्पियां शहर के बाशिंदों को कहीं दूसरा दुर्लभ कश्यप न दे दे। दुर्लभ कश्यप इसलिए कि ओशो के शहर में हुई इतनी बड़ी घटना के बाद लोगों के मुंह पर लगे तालों ने मानवीयता पर लग रहे ग्रास को बयां कर दिया है। शहर के बीचों बीच बिक रही अवैध शराब, शहर में बढ़ता स्मैक का नशा, साहूकारों का चक्रवर्ती ब्याज, अपराधियों का खुलेआम अपराध करना कल मधुर चौरसिया पर बीता तो कहीं कल आपके घरों से कोई मधुर देखने न मिले इसीलिए विरोध जरूरी है..? शहरवासियों की चुप्पियों ने उस परिवार को अकेला छोड़ दिया और ये बताया कि उन्हें भी अपने शहर गाडरवारा में उज्जैनी दुर्लभ कश्यप की जरूरत है। न सत्ता न विपक्ष, सिवाय मीडिया के किसी ने इस घटनाक्रम पर खुलकर विरोध नहीं किया। जबकि शहर बंद होना था एकमत विरोध होकर आपराधिक काम बंद होने थे। पुलिस ने कार्यवाही की लेकिन उस शिकायत को कचरे में डालकर पुलिस ने बता दिया कि बिना घटना घटित हुए पुलिस केवल तमाशबीन बनी रहने के लिए है। (जगत फीचर्स)

खराब पोषण आहार पर कार्यवाही

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिमरनी। टिमरनी के आंगनबाड़ी केंद्रों में घटिया पोषण आहार वितरित किया प्रशासन ने कड़ा कदम उठाते हुए मां रेवा स्व सहायता समूह का कार्य आदेश तत्काल प्रभाव से निरस्त किया। जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं महिला बाल विकास संजय त्रिपाठी ने बताया कि कलेक्टर आदित्य सिंह के निर्देश पर यह कार्यवाही की है। आंगनबाड़ी केंद्रों में मीनू अनुसार भेजे गए चांवल में कीड़े निकले। विधायक प्रतिनिधि श्रीमती सोलंकी नगर परिषद विधायक प्रतिनिधि ओमप्रकाश मिश्रा ने वार्ड 4 में आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया। केंद्रों पर मीनू अनुसार भेजे गए चांवल में कीड़े निकले। नगर की 19 आंगनबाड़ी केंद्रों में उस समय सभी अचंभित रह गये जब बच्चों को मीनू अनुसार चावल में कीड़े निकले। प्राप्त जानकारी के अनुसार मीनू के आधार पर आंगनबाड़ी केंद्रों में पुलाव कड़ी पकोड़े दिये जाते हैं। कुछ आंगनबाड़ी केंद्रों ने बाजार से वैकल्पिक व्यवस्था कर बच्चों को भोजन कराया। वहीं कुछ आंगनबाड़ी केंद्रों ने खाना हटवाया। यह बात आग की तरह पूरी टिमरनी में फ़ैल गई। सभी आंगनबाड़ी केंद्रों से खाना हटवाया गया। जब यह जानकारी मिली तो महिला बाल विकास विभाग विधायक प्रतिनिधि श्रीमती रितु सोलंकी एवं नगर परिषद विधायक प्रतिनिधि ओमप्रकाश मिश्रा ने वार्ड 4 की आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया जो शिकायत आई है वह सत्य है। आंगनबाड़ी केंद्र में आज भोजन को देखा जिसमें कीड़े नजर आये। फिर दोनों ने पंचनामा बनाया। टिमरनी शहरी स्कूलों में मध्यान्ह भोजन पदाय कर रहे 5 स्व सहायता समूह को नवीन व्यवस्था होने तक टिमरनी शहर की 19 आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषण आहार पदाय करने का काय दिया गया है। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास हरदा संजय त्रिपाठी ने बताया कि जिले के सभी शहरी क्षेत्रों में पोषण आहार पदाय करने हेतु नवीन स्व सहायता समूह के चयन की कार्यवाही की जा रही है। (जगत फीचर्स)

पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी ने पुलिस लाईन में आयोजित जनरल परेड की सलामी ली

-कैलाशचंद्र जैन

जगत प्रवाह. विदिशा। पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा के द्वारा सभी पुलिस इकाईयों में प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को नियमित रूप से जनरल परेड आयोजित किये जाने हेतु निर्देशित किया गया है, जिसके तारतम्य में पुलिस अधीक्षक विदिशा रोहित काशवानी ने पुलिस लाईन में आयोजित जनरल परेड की सलामी ली। इस दौरान पुलिस अधीक्षक विदिशा के द्वारा परेड का बारीकी से निरीक्षण किया तथा अच्छा टर्नआउट वाले 16 अधिकारी/कर्मचारियों को पुरूस्कृत किया। साथ ही पुलिस बैण्ड का भी निरीक्षण किया गया। जनरल परेड के दौरान स्कार्ड ड्रिल, बल्चा परेड एवं ओआर का आयोजन भी किया गया। पुलिस अधीक्षक विदिशा द्वारा थाना स्तर पर अच्छा कार्य करने वाले 11 अधिकारी/कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र भी वितरित किये। इस दौरान पुलिस अधीक्षक

विदिशा ने बताया गया कि जनरल परेड का नियमित अभ्यास करने से जवानों में एकता और अनुशासन की भावना को मजबूती मिलती है और शास्त्र कवायत के कौशल में सुधार होता है। परेड के माध्यम से पुलिस कर्मियों की नियमित फिटनेस बेहतर होती है और यह पुलिस अधिकारियों और जवानों के बीच प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने का माध्यम बनती है। जनरल परेड के दौरान प्रमुख रूप से अनुविभागीय अधिकारी पुलिस सिरोंज उमेश तिवारी, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस लटेरी अजय मिश्रा, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस गंजबासौदा मनोज मिश्रा, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस कुरवाई मनीष राज, भूर सिंह चौहान रक्षित निरीक्षक विदिशा सहित जिले के सभी थाना प्रभारी सहित लगभग 120 पुलिस अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। (जगत फीचर्स)

समूह नृत्य में मिला तृतीय स्थान

-अमित राजपूत

जगत प्रवाह. देवरी। भारतीय ज्ञान परम्परा पर आयोजित जिला स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं में शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय देवरी की समूह नृत्य टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। आयोजित कार्यक्रम में जिले की 13 टीमों ने सहभागिता की जिसमें देवरी महाविद्यालय की टीम ने बधाई नृत्य प्रस्तुत करके भारतीय ज्ञान परम्परा को जीवंत करने का प्रयास मंच के माध्यम से किया। इस अवसर पर दल प्रभारी डॉ. मनीषा पाण्डे एवं टीम कु. वैशाली रजक, कु. गुनगुन बाल्मीक, कु. आफरीन, अरमान बहना, अक्षय पाण्डेय, कु. कल्पना कहार को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ओम प्रकाश दुबे एवं जनभागीदारी अध्यक्ष दीपक ठाकुर द्वारा पुरस्कृत किया गया। उन्होंने कहा कि आप और छात्र-छात्राएं बधाई के पात्र हैं जिन्होंने महाविद्यालय एवं नगर का नाम रोशन किया। इस अवसर पर डॉ. जी.आर. चौहान, डॉ. मनोज कुमार मिश्रा आदि मौजूद रहे।

(जगत फीचर्स)

सम्पादकीय

बांग्लादेश के बाद पश्चिम बंगाल में क्यों बन रही अराजक स्थितियां?

पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के दुलमुल रवैए, तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की गुंडागर्दी और कट्टरवादी ताकतों की निर्भय सक्रियता के कारण अराजक स्थितियां बन गई हैं। सत्ताधारी दल, उसकी विचारधारा और अन्य मामलों में असहमति रखनेवाले नागरिकों के लिए वहाँ जीवनयापन अत्यंत कठिन हो गया है। पश्चिम बंगाल से कई वीडियो वायरल हुए हैं, जिनमें विपक्षी दलों के कार्यकर्ताओं और आम नागरिकों को मारापीटा जा रहा है। यहाँ तक की इस्लामिक कानूनों को आधार बनाकर शरिया अदालतें लगाई जा रही हैं और लोगों को सजा दी जा रही है। भारतीय जनता पार्टी द्वारा तो इस स्थिति की ओर समूचे देश का ध्यान आकर्षित किया ही जा रहा था लेकिन अब प्रदेश के बड़े कांग्रेसी नेता अधीर रंजन चौधरी ने भी अपनी चुप्पी तोड़ दी है। हालांकि, कांग्रेस ने अभी तक उनकी चिंता के साथ अपना समर्थन प्रदर्शित नहीं किया है। क्योंकि कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व प्रदेश की भयावह स्थितियों पर अब तक चुप है। जबकि पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं एवं मुस्लिम गुंडों की ओर से केवल भाजपा के कार्यकर्ताओं की ही मारपीट एवं हत्या नहीं की जा रही है अपितु उनके निशाने पर वामपंथी और कांग्रेसी कार्यकर्ता, समर्थक भी हैं। अभी हाल ही में कांग्रेस के कार्यकर्ता की पेड़ से बांधकर पीट-पीटकर हत्या की दी गई। लेकिन अभी तक अधीर रंजन चौधरी के अलावा किसी भी कांग्रेसी नेता की संवेदनाएं नहीं जागी हैं।

संभवतः कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व विपक्षी गठबंधन में ममता बनर्जी को बनाए रखने की मंशा से 'जंगल राज' और अपने कार्यकर्ताओं पर हमलों की घटनाओं में चुप्पी साधने को मजबूर है। लेकिन ऐसी मजबूरी किसी काम की जो लोकतंत्र और संविधान की रक्षा ही नहीं कर सके। अपने कार्यकर्ताओं के दुःख-दर्द में सहभागी न हो सके। प्रदेश में स्थितियां इतनी भयावह हैं कि कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को पत्र लिखने के लिए मजबूर हो गए। उन्होंने पत्र लिखकर पश्चिम बंगाल में बनी अराजक स्थिति से राष्ट्रपति को अवगत कराया और राज्य में कानून व्यवस्था बहाल करने के लिए राष्ट्रपति मुर्मू से हस्तक्षेप करने की मांग की है। अपने पत्र में उन्होंने उन सब बातों को दोहराया है, जिन्हें अब तक भाजपा उठाती आई है। जैसे, चुनावी एवं राजनीतिक हिंसा। पंचायत एवं विधानसभा चुनावों की भाँति हाल ही में सम्पन्न हुए आम चुनावों के दौरान एवं बाद में तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं द्वारा विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर हमले करना, उनकी आजीविका समाप्त करना और ध्रुवीकरण करना। दो पन्नों के पत्र में चौधरी ने स्पष्ट लिखा कि "मेरे लिए व्यक्तिगत स्तर पर, राज्य में अराजक स्थिति को देखना न केवल परेशान करने वाला है, बल्कि बहुत पीड़ादायक भी है। इसका कारण सत्तारूढ़ पार्टी का विपक्ष के कार्यकर्ताओं, समर्थकों और समर्थकों के प्रति क्रूर रवैया है"। चौधरी ने 'क्रूर रवैया' शब्द का उपयोग उचित ही किया है। जिस प्रकार से वहाँ लोगों के घर-दुकान जलाए जा रहे हैं, उनको घेरकर निर्दयीयता के साथ मारा-पीटा जा रहा है, महिलाओं के साथ अभद्रता की जा रही है, यह सब क्रूरता की पराकाष्ठा है। इस क्रूरता के कारण लोगों को अपने घर छोड़कर पलायन के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इसकी उम्मीद तो कम ही है कि अधीर रंजन चौधरी की पीड़ा को कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व सुनेगा। परंतु, पश्चिम बंगाल की स्थितियां सुधारने एवं कानून की व्यवस्था लागू कराने के लिए केंद्र सरकार को अवश्य ही कुछ ठोस कदम उठाने चाहिए।

सियासी गहमागहमी

कौन बनेगा मध्यप्रदेश भाजपा का प्रदेश अध्यक्ष?

मध्यप्रदेश में भाजपा में इन दिनों प्रदेश अध्यक्ष के पद को लेकर खासी गहमागहमी मची हुई है। हर कोई इस सवाल का जवाब ढूंढने में जुटा हुआ है कि आखिर प्रदेश भाजपा का नया प्रदेश अध्यक्ष कौन होगा। एक तरफ जहां भूपेन्द्र सिंह के नाम की चर्चा तेज है, वहीं दूसरी ओर वीडी शर्मा अपने कार्यकाल को आगे बढ़ाने को लेकर पूरा गणित बैठाने में जुटे हुए हैं। इस बीच एक और नया नाम आया है वह है प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा का। ऐसे में अगर भाजपा शीर्ष नेतृत्व जातिवाद के गणित को बैठाता है तो फिर नरोत्तम मिश्रा के प्रदेश अध्यक्ष बनने के संकेत अधिक है। क्योंकि वीडी शर्मा पहले से ही अतिरिक्त कार्यकाल पर चल रहे हैं। अब देखने वाली बात यह है कि आखिर कितने दिन बाद प्रदेश अध्यक्ष के पद से पर्दा उठता है।

कांग्रेस नेतृत्व ने बघेल को किया तलब

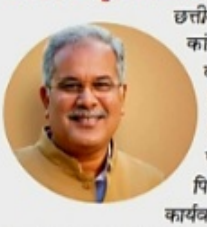

छत्तीसगढ़ कांग्रेस से खबर है कि पिछले दिनों कांग्रेस आलाकमान ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को दिल्ली तलब किया है। बघेल को दिल्ली तलब करने के पीछे क्या कारण है यह अब तक खुलकर सामने नहीं आ पाया है। लेकिन बघेल करीबियों के अनुसार पिछले दिनों हुई ईडी और आयकर विभाग की कार्यवाही में जो तथ्य निकलकर सामने आये हैं उससे आलाकमान बहुत नाराज है, क्योंकि बघेल के करीबियों ने पूछताछ में पार्टी आलाकमान के कई शीर्षस्थ नेताओं के नाम ले लिये हैं जिनसे आगामी समय में ईडी और आयकर विभाग की टीम पूछताछ कर सकती है।अब देखने वाली बात यह होगी कि बघेल इस पूरी समस्या से किस तरह से छुटकारा पाते हैं क्योंकि पिछले कुछ समय से बघेल के सितारे गरदिश में समझ दिखाई पड़ रहे हैं।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

हाथरस रेप पीड़िता के परिवार को घर में बंद करके रखना और गैंग रेप के आरोपियों का खुलेआम घूमना बाबा साहेब के संविधान की मूल भावना के खिलाफ है।

BJP सरकार ने पीड़ित परिवार को दूसरी जगह घर देकर शिफ्ट करने का वादा भी पूरा नहीं किया है।

-राहुल गांधी

कांग्रेस नेता @RahulGandhi

मध्य प्रदेश में कानून व्यवस्था चौपट हो गई है। महिलाएँ, बच्चे, किसान और नौजवान सभी परेशान हैं। दलित और आदिवासियों पर अत्याचार हो रहे हैं। प्रदेश की अर्थव्यवस्था चौपट हो गई है। महँगाई चरम पर है।

लेकिन इस सब से भाजपा की सरकार को कोई मतलब नहीं है।

-कमलनाथ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

@OfficeOfKNath

राजवीरों की बात

गांधी परिवार के एक और सदस्य प्रियंका गांधी की संसद के परिसर में हुई आमद

समता पाठक/जगत प्रवाह

प्रियंका गांधी एक भारतीय राजनेता, कांग्रेस सांसद और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और फिरोज गांधी की पोती हैं। वह अपने आप में एक अद्वितीय व्यक्तित्व है और अक्सर प्रियंका गाँधी की तुलना दादी-माँ के साथ की जाती है। उन्होंने अपना पहला भाषण 16 साल की उम्र में ही दे दिया था, जिससे यह पता चलता है कि उनके अंदर नेता की गुणवत्ता अंतर्निर्मित है और यह वंशानुगत है। जैसा कि हम जानते हैं कि वह 2019 तक राजनीति में वे ज्यादा सक्रिय नहीं थीं। होने वाले लोकसभा चुनाव में सभी पार्टी जीत हासिल करने के लिए काफी मेहनत कर रही हैं। इसी के कारण कांग्रेस पार्टी ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है और प्रियंका गाँधी को पूर्वी उत्तर प्रदेश के एआईसीसी के जनरल सेकेटरी बनाने का निर्णय लिया गया है। प्रियंका गांधी या प्रियंका गांधी वाड्रा का जन्म 12 जनवरी, 1972 को नेहरू-गांधी परिवार में हुआ था। वह राजीव गांधी और सोनिया गांधी की बेटी हैं। उनके पिता भारत के प्रधानमंत्री थे और माँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष थीं। राहुल गांधी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष प्रियंका गांधी के भाई हैं। वह अपने भाई राहुल गांधी से दो साल छोटी हैं। उन्होंने 18 फरवरी, 1997 को एक व्यवसायी रॉबर्ट वाड्रा से शादी की और रेहान और मिराया 2 बच्चों की मां हैं।

संजय गांधी उनके चाचा थे जिनकी 1980 में विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी और मेनका गांधी उनकी चाची हैं और दक्षिणपंथी राजनीतिक दल, भाजपा की एक राजनेता और महिला और बाल विकास की केंद्रीय कैबिनेट मंत्री हैं. वरुण गांधी प्रियंका गांधी के चचेरे भाई और भाजपा के एक राजनीतिज्ञ हैं। प्रियंका गांधी ने अपनी प्राथमिक और उच्च शिक्षा मॉडर्न स्कूल और कॉन्वेंट ऑफ जीसस एंड मैरी, नई दिल्ली से पूरी की। उन्होंने 2010 में साइकोलॉजी विषय में स्नातक और फिर बौद्ध अध्ययन में एम.ए किया। प्रियंका गांधी के राजनैतिक जीवन पर नजर डालें तो वह जनवरी 2019 तक राजनीति में सक्रिय नहीं रहीं, लेकिन वह अमेठी और रायबरेली निर्वाचन क्षेत्र में लोकप्रिय हैं। 2004 में, वह उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में अपनी माँ के अभियान की प्रबंधक थीं। उन्होंने 2007 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में अमेठी-रायबरेली क्षेत्र की 10 सीटों के लिए कांग्रेस पार्टी की मदद की। लोकसभा चुनाव के लिए उन्हें 23 जनवरी, 2019 को पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रभारी के रूप में कांग्रेस पार्टी का महासचिव नियुक्त किया गया है। 16 साल की उम्र में प्रियंका गाँधी ने अपना पहला भाषण दिया था जो कि एक नेता की विरासत की गुणवत्ता को दर्शाता है।

मिसाल

एआई, चैट जीपीटी और तकनीक से ग्रामीणों को जोड़कर आईएएस अधिकारी जयंत नाहटा ने पेश की मिसाल

प्रशासनिक सेवा के दायित्व के साथ सामाजिक सेवा को प्राथमिकता में रख

जयंत नाहटा ने बदली छत्तीसगढ में दंतेवाड़ा जिले की तकदीर और तस्वीर

-विजया पाठक

कहते है मन में अगर सच्ची लगन और इच्छाशक्ति हो तो नेक मन से किए गए कार्यों को पूरा करने में चाहे जितनी चुनौतियां आ जाए वह आपके इरादे डगमगा नहीं सकती है। ऐसे ही कुछ नेक इरादो के साथ प्रशासनिक सेवा में आए आईएएस अधिकारी जयंत नाहटा। वर्ष 2020 बैच के आईएएस अफसर जयंत वर्तमान में छत्तीसगढ के दंतेवाडा जिले के नक्सली क्षेत्र में बतौर जिला पंचायत सीईओ के पद पर पदस्थ है। मूलतः पश्चिम बंगाल के कोलकाता के जयंत के मन में कॉलेज के दिनों से ही छोटे और कमजोर वर्ग के बच्चों और महिलाओं को शिक्षित करने का भाव था यही कारण है कि प्रशासनिक सेवा में आने के बाद जयंत ने शासकीय सेवा के साथ सामाजिक सेवा का दायित्व भी बखूबी निभाया और उन्होंने दंतेवाडा के सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों और महिलाओं की दशा और दिशा बदलने का कार्य आरम्भ किया। जयंत की पहली पोस्टिंग वर्ष 2021 में दंतेवाडा में बतौर एसडीएम हुई थी। उन्होंने ड्यूटी ज्वाइन करते ही जिले का भ्रमण किया और सामाजिक समस्याओं के अलावा उन्होंने जिले की व्यावहारिक समस्या को करीब से देखा और उसे समझने के बाद इस समस्या के निदान की दिशा में कार्य आरम्भ किया।

पढ़ाई को बनाया रुचिकर

जयंत ने बच्चों को स्कूल और किताबों से जोड़े रखने के लिए पढ़ाई को रुचिकर बनाया। बच्चे अब बैग लेकर नहीं बल्कि एआई की मदद से टेबलेट तथा स्मार्ट बोर्ड से पढ़ाई कर रहे हैं। इसके लिए वे जिले में हर स्कूल में दो घंटे की एआई क्लास लगवाते है। अब बच्चे एआई मॉडल से सवाल पूछते है और साथ ही भारतीय संस्कृति की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत भी सीख रहे हैं।

तकनीक से आसान बना इलाज

जयंत ने ग्रामीणों के इलाज के लिए एआई तकनीक का उपयोग कर एक वर्चुअल नर्स की मदद लेना आरंभ किया। चैट जीपीटी से तैयार हेल्थ असिस्टेंट मॉडल में 5 सवाल हैं। उम्र-जेंडर, लक्षण, जांच, इलाज और लाइफ स्टाइल चेंज। इससे ही नर्सें इलाज कर पा रही हैं।

फोन पर मिलता है उपचार

जयंत ने ग्रामीणों के लिए ऑनलाइन डॉक्टर की व्यवस्था की जिससे ग्रामीणों को आवश्यकता पड़ने पर छोटी बीमारियों का इलाज तुरंत मिल जाए जिसके लिए उन्होंने स्वास्थ्य केंद्रों पर कैमरे और कंप्यूटर लगाए गए हैं। जिला अस्पताल के डॉक्टरों की 3 घंटे ड्यूटी लगती है। वे वीडियो कॉल से रोज 100 का इलाज करते हैं।

इलाज की व्यवस्था

जयंत ने ग्रामीणों के लिए त्वरित उपचार की व्यवस्था किऱीर आप गांव के लोगों को इलाज के लिए इधर उधर भटकना नहीं होता है अब गांव के उप स्वास्थ्य केंद्र में उन्हें बेहतर इलाज मिल रहा है।

जटिलताओं के उद्भव से भी जुड़े रहे

जयंत नाहटा ने अपने जिला प्रशिक्षण के दौरान अमूल्य अंतर्दृष्टि सीखी, भले ही कई अन्य लोगों को अपने प्रशासनिक प्रशिक्षण के दौरान संघर्ष करना पड़ा। उनकी प्रशासनिक क्षमताओं को निखारने के साथ-साथ, उनके अनुभव जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे विवाह और वयस्कता की जटिलताओं के उद्भव से भी जुड़े रहे। सिविल सेवा प्रशिक्षण से गुजरने की कठिनाइयों के बीच, जयंत की राह भावनात्मक और पेशेवर दोनों तरह से विकास की एक दिलचस्प कहानी है। कोलकाता में पैदा हुए और पले-बढ़े होने के बावजूद, जयंत की जड़ें दिल्ली के यूपीएससी केंद्र, ओल्ड राजिंदर नगर में गहराई से जमी हुई थीं, जहां वह ऐसे लोगों से घिरे हुए थे जो सिविल सेवाओं में काम करने की इच्छा रखते थे। जब वह दो साल के थे, तब उनके माता-पिता दिल्ली आ गए, उनके शैक्षणिक पथ में 2013 में एक नाटकीय बदलाव आया जब उन्हें प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली में स्वीकार कर लिया गया। उन्होंने पांच साल तक बायोकेमिकल इंजीनियरिंग और बायोटेक्नोलॉजी का अध्ययन किया और इस प्रक्रिया में बी.टेक और एम.टेक की डिग्री हासिल की। जब जयंत ने आईआईटी दिल्ली में अपने चौथे वर्ष में सिविल सेवा परीक्षा के लिए परिश्रमपूर्वक अध्ययन करना शुरू किया, तो यह उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले वरिष्ठों से प्रेरित होकर, उन्हें एहसास हुआ कि सिविल सेवाओं में करियर से समाज में महत्वपूर्ण बदलाव लाए जा सकते हैं। निर्णय लेने और रचनात्मक परिवर्तन लाने की उनकी प्रवृत्ति छात्र मामलों की परिषद के महासचिव के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान स्पष्ट हो गई थी जब उन्होंने बड़ी सफलता के साथ इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग पद्धति शुरू की और प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों का ध्यान आकर्षित किया।

हालाँकि, उनकी यूपीएससी यात्रा चुनौतियों सहित थी। अपने पहले प्रयास में उन्होंने प्रीलिम्स और मेन्स तो पास कर लिया लेकिन इंटरव्यू क्लियर नहीं कर सके। उन्होंने अपनी गलतियों से सीखा और साल 2019 में फिर से कोशिश की, इस बार उनकी मेहनत रंग लाई और उन्होंने 298वीं रैंक के साथ परीक्षा पास की और भारतीय सिविल अकाउंट्स सर्विस में जगह बनाई। हालाँकि, वे यहीं नहीं रुके, उनका सपना आईएएस बनने का था, इसलिए उन्होंने अपना प्रयास जारी रखा और तीसरी बार फिर से परीक्षा दी। 56वीं रैंक प्राप्त करके, उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल होने के अपने लक्ष्य को प्राप्त किया । जयंत नाहटा यकीनन जूनून और जज्बे की मिसाल है।

कृत्रिम बुद्धि की निगरानी में महाकुंभ मेला

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकार

समय के साथ देश में लगने वाले दुनिया के सबसे बड़े मेले कुंभ में भी परिवर्तन देखने में आते रहे हैं। इसी बदलाव के चलते इस बार प्रयागराज में अस्थाई रूप से निर्मित की गई 'कुंभनगरी' में 13 जनवरी 2025 से शुरू होकर 31 मार्च तक चलने वाले इस महाकुंभ में श्रद्धालुओं की निगरानी कृत्रिम बुद्धि से संचालित उपकरण करेंगे। इस हेतु कुंभनगरी का पूर्णतः डिजिटलीकरण कर दिया गया है। प्रत्येक 12 साल में प्रयाग में गंगा-यमुना और अदृष्य सरस्वती नदियों के संगम पर महाकुंभ आयोजित होता है। 45 दिन चलने वाले इस कुंभ में 45 करोड़ तीर्थयात्रियों के आने की उम्मीद है। 2013 में 20 करोड़ से ज्यादा यात्री प्रयाग पहुंचे थे। इस बार दोगुने से ज्यादा लोगों के पहुंचने का अनुमान इसलिए है, क्योंकि अयोध्या में राम मंदिर बनने के साथ वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर का भी कायाकल्प हुआ है। साथ ही आवागमन के साधन बढ़े हैं। अतएव 04 तहसील और 67 ग्रामों की 6000 हेक्टेयर भूमि पर मेले में यात्रियों के लिए समुचित प्रबंध योगी आदित्यनाथ सरकार ने किए हैं।

लोगों को आवागाही में असुविधा न हो? इसलिए मेला प्राधिकरण और गूगल के बीच हुए समझौते के अंतर्गत आवागमन मानचित्र (नेविगेशन मैप) की सुविधा मोबाइल व अन्य संचार उपकरणों पर दी गई है। इस सुविधा से यात्री गंतव्य की स्थिति और दिशा हासिल कर सकते हैं। इस मानचित्र में मेले की धार्मिक महिमा से जुड़े नदी-घाट, मंदिर, अखाड़े, संतों के डेरे, ठहरने के स्थल, होटल और खान-पान संबंधी भोजनालयों की जानकारी एक क्लिक पर उपलब्ध होगी। 29 जनवरी को पड़ने वाली मौनी अमावस्या को सबसे बड़ा पर्व स्नान माना है। अतएव इस दिन छह से दस करोड़ लोग गंगा में स्नान करने का अनुमान है। बांकी पांच पर्वों में 2 से 8 करोड़ लोग संगम के पवित्र जल में डुबकी लगाने आ सकते हैं। वैसे तो सुरक्षा के लिए 37,000 पुलिस और विभिन्न बलों के जवान तैनात रहेंगे, लेकिन इतने लोगों पर इन जवानों द्वारा निगाह रखना आसान नहीं है, इसलिए समूची कुंभनगरी में कृत्रिम बुद्धि आधारित कैमरे लगा दिए गए हैं। चप्पे-चप्पे पर लगे इन 2400 कैमरों की आंख में एआई लैंस लगे हैं। अतएव ये चेहरे पहचानकर अपराधियों पर नजर रखेंगे। इस नगरी में जगह-जगह डिजिटल और बहुभाषी टच स्क्रीन बोर्ड लगाए गए हैं। जिन पर किसी भी प्रकार की घटना की तत्काल शिकायत दर्ज कराई जा सकेगी। ये सुविधाएं मेले में दिन-रात उपलब्ध रहेंगी। महाकुंभ के इस पर्व पर ढाई हजार करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं।

प्रयागराज कुंभ मेले पर विशेष

कुंभ मेले की शुरुआत

कुंभ मेले का इतिहास करीब एक हजार साल पुराना माना जाता है। आदि शंकराचार्य ने इसे प्रारंभ किया था। लेकिन प्राचीन भारत की पौराणिक कथाओं के आधार पर कुंभ का आरंभ समुद्र-मंथन के समय से माना जाता है। समुद्र-मंथन की कथा दुर्वासा ऋषि के अभिशाप से जुड़ी है। इंद्र ने जब दुर्वासा का अभिवादन नहीं स्वीकारा तो उन्होंने इंद्र का वैभव नष्ट होने का श्राप दे दिया। श्राप फलीभूत हुआ। इससे मुक्ति के लिए भगवान विष्णु की सलाह पर देव और देवताओं ने मिलकर क्षीर-सागर में मंथन किया। समुद्र-मंथन के अंत में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के आविष्कारक वैद्य धन्वन्तरि एक हाथ में अमृत-घट और दूसरे में आयुर्वेद-ग्रंथ लेकर प्रकट हुए। अर्थात उनके कर-कमलों में मनुष्य के शारीरिक उपचार के प्रतीक रूप में जहां अमृत से भरा घड़ा था, वहीं किस रोग का उपचार कैसे किया जाए, उसकी पद्धति का पूरा शास्त्र भी था। अमृत देखते ही दानवों ने धैर्य खो दिया। वे विचलित हो गए। उसे हथियाने के लिए छीना-झपटी शुरू हो गई। इसी दौरान इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को अमृत-कुंभ लेकर भागने का संकेत दिया। फलस्वरूप जयंत कलष छीन कर भाग खड़ा हुआ। दानव कलष छीनने के लिए जयंत के पीछे दौड़ पड़े। इस कुंभ को हड़पने के लिए देव एवं दानवों के बीच यह संघर्ष 12 वर्षों तक चला। इस संघर्ष के दौरान अमृत-कलश की बूंदें, जिन 12 स्थलों पर छलकीं, उसमें आठ स्थान स्वर्ग में हैं और हरिद्वार, प्रयाग, नासिक तथा उज्जैन पृथ्वी पर हैं। संघर्ष में सहयोग और कलश की सुरक्षा की दृष्टि से जयंत की सहायता सूर्य, चंद्र और बृहस्पति ने की। इनके भी रक्षा के दायित्व निश्चित थे। सूर्य अमृत-कुंभ को फूटने से, चंद्रमा धरती पर गिरने से और बृहस्पति ने दानवों के हाथों में जाने से बचाया। इसीलिए दुनिया के सबसे बड़े मेले 'कुंभ' का आयोजन बृहस्पति, सूर्य व चंद्र के आकाशीय योग के अनुसार होता है।

मोहिनी अवतार और राहु-केतु का जन्म

कलश प्राप्ति के संघर्ष को विराम नहीं लगते देख देवता असमंजस की मनस्थिति में आकर खिन्न हो गए, तब विष्णु ने उन्हें ढांढस बंधाते हुए आश्वस्त किया, 'देवगण निश्चिंत रहें। मैं इस कलश को प्राप्त कर आपकी कामना को पूरा करने का उपाय करता हूं।' मुख से उद्घत हुए इन शब्दों के साथ ही, विष्णु ने अत्यंत, सुंदर सुगठित देहयष्टि और चंचला प्रवृत्ति की मोहिनी स्त्री का रूप धारण कर लिया। संघर्ष स्थल पर जब अप्सरा सी रूपवान स्त्री को देव व दानवों ने देखा तो एकाएक ठिठक गए। राक्षसों की मति व लालसा उस स्त्री की कांतिमयी देह की ओर आकर्षित होने लगी। देव व दानव जब एकटक निहारते हुए जड़वत हो गए तो स्त्री अवतारी विष्णु बोले, 'आप लोग किस कारण से झगड़ रहे हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में राक्षसों ने अमृत-कलश को लेकर छिड़े संघर्ष का पूरा वृत्तांत सुना दिया। राक्षसों की कही बातें सुनकर वह स्त्री हंसी। जैसे उनकी मूढ़ता का उपहास कर रही हो। और फिर कुशलतापूर्वक राक्षसों पर वक्रदृष्टि डालते हुए बोली, 'हे दानवों! तुम व्यर्थ ही अपना समय, शक्ति और ऊर्जा नष्ट कर रहे हो? यदि चाहो तो मैं स्वयं ही यह अमृत एक समान भागों में बांटकर पिला सकती हूं। यदि सहमत हो तो बताओ?

अंततः किंकर्त्तव्यविमूढ़ असुरों ने विश्व-मोहिनी के रूपजाल से सम्मोहित होते हुए अमृतपान कराने की सहमति जता दी। राक्षसों की प्रगट मंशा से अवगत होने के बाद मोहिनी ने देव और दानवों से निवेदन करके उन्हें अमृतपान के लिए अलग-अलग पंक्तियों में बिठा दिया। शांतिपूर्वक बैठने के उपरांत मोहिनी रूपी मायावी विष्णु देवताओं को अमृतपान कराते रहे, किंतु असुरों को साधारण जल पिलाते रहे। मायावी मोहिनी के रूपजाल से विस्मित सम्मोहित व विवेक खोए असुर, विष्णु की भेद से भरी इस लीला को नहीं समझ पाए।

लेकिन कुछ विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्तियों में प्रच्छन्न माया को भी ताड़ने की कुदरती अंतर्दृष्टि होती है। सो, मायावी विष्णु जब देवताओं की पांत में अंतिम छोर पर बैठे देवगणों को अमृतपान करा रहे थे, तब उनकी इस माया को हिरण्य कश्यप की पुत्री सिंहिका और दैत्य विप्रचित्ति के पुत्र राहू ने ताड़ लिया। तब तत्परता से उसने अगोचर रूप से अपनी शक्तियों का आवाहन किया और देव रूप में अवतरित होकर देवताओं की पंक्ति में सूर्य व चंद्रमा के बीच में बैठ गया। मोहिनी रूपी विष्णु ने देवता के भ्रम में राहू को भी अमृत पिला दिया।

किंतु जब सूर्य और चंद्रमा ने अपने अलौकिक तेज से राहू के छद्म भेष के पार देखा तो वे सच्चाई जान गए। उन्होंने तुरंत मोहिनी-रूपा विष्णु को छद्मवेशी राहु को संकेतों के माध्यम से अवगत कराया। सूर्य व चंद्रमा के संकेतों से जब विष्णु वास्तविकता से साक्षात हुए तो आक्रोशित हो उठे और मोहिनी के मायावी रूप से मुक्त होकर अपने वास्तविक विष्णु के रूप में प्रगट हो गए।

भगवान विष्णु को असली रूप और गुस्से के आवेग में देख राहू भयभीत होकर भाग खड़ा हुआ। तब क्रोधाग्नि से विचलित हुए विष्णु ने सुदर्शन चक्र छोड़कर राहु की गर्दन धड़ से अलग कर दी। सुदर्शन चक्र से कटते ही राहू की देह दो भागों में विभाजित हो गई। चूंकि राहू अमृत पी चुका था, इस कारण उसके शरीर को संजीवनी मिल चुकी थी। फलस्वरूप उसके शीश और धड़ दोनों ही जीवित रहे। इनमें सिर 'राहू' कहलाया और धड़ 'केतु' के नाम से प्रचलित हुआ।

कुंभ का विज्ञान

सूर्य, पृथ्वी, चंद्रमा और गुरु के साथ शनि की विशेष स्थिति प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक के कुंभ व सिंहस्थ की तिथि सुनिश्चित रहती है। इस तिथि को एक स्थान पर आने में 12 वर्श लगते हैं। इसी तथ्य को स्थापित करने की दृष्टि से बारह दिव्य दिवस का समय लगता है। वेगनर ने पृथ्वी की उत्पत्ति की जानकारी देने के क्रम में पेंजिया की स्थिति को अपने मानचित्र में दक्षिण ध्रुव में दर्शाया है। वस्तुतः प्री कैम्ब्रियन युग में भूमंडल में जल-थल भाग दक्षिणी ध्रुव में इकट्ठे थे। इस कालखंड में भारतीय महाद्वीप भी दक्षिण ध्रुव के एकदम निकट था। इससे संकेत मिलता है कि प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक भी दक्षिण ध्रुव के निकट रहे होंगे। उस कालखंड में वहां छह माह का दिन और छह माह की रात हुआ करते थे। आज भी दक्षिणी ध्रुव और उत्तरी ध्रुव में छह माह की रात्रि और छह माह के ही दिवस होते हैं। इस तरह से 12 दिन और 12 रात अर्थात छह रात और एक दिन का गुणा-भाग करने से जो योगफल निकलता है, वह 12 वर्श का होता है। स्पष्ट है, वेगनर की यह खोज पुराणों में दर्ज कूर्मावतार में उल्लेखित समुद्र-मंथन की कथा को विज्ञान के संदर्भ में पुष्टि करती है।

कुंभ में सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रहों का महत्व

अमृत-कलश की रक्षा में सूर्य, चंद्र और बृहस्पति ने इन्द्र पुत्र जयंत की रक्षा की थी। सूर्य ने अमृत घट को फूटने से, चंद्र ने गिरने से और बृहस्पति ने दानवों के हाथ में जाने से बचाया था। इसीलिए कुंभ पर्व का आयोजन बृहस्पति, सूर्य व चंद्र के आकाशीय योग के अनुसार होता है। समुद्र-मंथन की कथा में बृहस्पति, कुंभ और 12 की संख्या महत्पूर्ण है। पुराणों में बृहस्पति को देवताओं का गुरू माना गया है, लेकिन वास्तव में वह सौर मंडल का एक ग्रह है, वह भी सबसे बड़ा ग्रह। बृहस्पति को नक्षत्र मंडल यानी कुल 12 राशियों का एक चक्कर लगाने में करीब 12 वर्श लगते हैं, जबकि वास्तव में ये होते 11.86 वर्ष हैं। बृहस्पति के इसी सूर्य-परिभ्रमण काल के आधार पर भारत में प्राचीन काल में षक व विक्रम संवतों के भी प्रचलन से पहले, बार्हस्पत्य संवत्सर की काल गणना अस्तित्व में थी। बार्हस्पत्य संवत्सर के दो चक्र थे। एक 12 वर्श का और दूसरा 60 वर्श का चक्र। पहला चक्र बृहस्पति के 12 राशियों में होने वाले भ्रमण पर आधारित था, इसलिए उसके वर्षों का महाचैत्र, महावैशाख और माहों को चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौश, माघ और फाल्गुन नाम दिए गए थे।

महाकुंभ का मेला ग्रह योग पर आधारित है। बृहस्पति को राशिचक्र का वस्तुतः सूर्य का एक चक्कर लगाने में मोटे तौर से 12 वर्ष लगते हैं। गोया, कुंभ मेले 12 साल के अंतराल से आयोजित होते हैं। अमृत-घट प्राप्ति के लिए देव-दानव संग्राम 12 वर्षों तक चला। ये 12 वर्ष 12 खगोलीय बार्हस्पत्य संवत्सर के द्योतक हैं। अमृत-कलश से बूंदें भी 12 स्थलों पर छलकी थीं। अपनी सटीक काल-गणना से भारतीय मनीषियों ने यह भी ज्ञात कर लिया था कि बृहस्पति को राशि चक्र का एक चक्र पूरा करने में वस्तुतः 11 वर्श और करीब 315 दिन लगते हैं। इस प्रकार 84 साल में एक साल का अंतर पड़ जाता है। इस गुणनफल के हिसाब से छह कुंभ तो 12 वर्शों के अंतराल से होंगे, लेकिन सातवां कुंभ 11 वर्ष बाद आ जाएगा।

समुद्र-मंथन का स्थान

क्षीरसागर का पानी अपने विशिष्ट गुणों के कारण बेहद उपयोगी रहा है। भारत का केरल तट क्षीरसागर की प्राथमिक भूमि रहा है। समुद्र-मंथन के लिए आधार भूमि होना जरूरी है। इस दृष्टि से यदि केरल तट पर देवों का समुदाय था तो लंका से अफ्रीका तक दैत्यों का समुदाय उपस्थित था। वस्तुतः देव संस्कृति मंत्र, तंत्र और अध्यात्म प्रधान थी, इसके विपरीत असुर भौतिकवादी थे। मंथन से अमृत-कलश प्राप्त हुआ तो देवता सबसे पहले उत्तर दिषा में गोदावरी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) पहुंचे। सबसे पहले यहीं कलश से अमृत की बूंदें छलकीं। नासिक के बाद भागते देव पूर्व की ओर अवन्तिका (उज्जैन) आए। यहां क्षिप्रा के तट पर छीना-झपटी में कुछ बूंदें टपकीं। यहां से संघर्शरत देव-दानव हरिद्वार पहुंचे। यहां भी अमृत कलश छलका। तत्पश्चात देव-दानव पश्चिम की ओर बढ़ते हुए प्रयाग पहुंचे। यहां भी बूंदें गिरीं। इस तरह पृथ्वी पर चार और स्वर्ग में आठ स्थलों पर अमृत-घट छलकने से बूंदें गिरीं। धरती पर तो कुंभ मेले लगने से समुद्र-मंथन की गाथा अमर है, लेकिन स्वर्ग में जिन आठ स्थलों पर अमृत-बूंदें गिरीं, वे किस अवस्था में हैं, कोई नहीं जानता। इस तरह से समुद्र-मंथन और कुंभ दोनों ही वैज्ञानिक अवधारणाएं हैं।

सफलता के तीन स्तंभः स्वस्थ शरीर, शांत दिमाग और बुलंद इरादे

आज की बात

प्रवीण कक्कड़
स्वतंत्र लेखक

आज हम बात करेंगे सफलता के उन तीन स्तंभों के बारे में, जिन पर आपकी सारी उपलब्धियां टिकी हुई हैं। जी हां, मैं बात कर रहा हूँ स्वस्थ शरीर, शांत दिमाग और बुलंद ईरादों की।

स्वस्थ शरीरः सफलता का आधार

एक स्वस्थ शरीर ही आपको उर्जावान बनाए रखता है और आपकी मेहनत को सार्थक बनाता है। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त नींद से आप अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। एक स्वस्थ शरीर आपको न केवल शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है, बल्कि मानसिक रूप से भी सतर्क रखता है।

शांत दिमागः सही फैसले का मार्गदर्शक

शांत दिमाग ही आपको सही फैसले लेने और चुनौतियों का सामना करने की शक्ति देता है। ध्यान, योग और सकारात्मक सोच आपके दिमाग को शांत रखने में मदद करते हैं। एक शांत दिमाग आपको तनाव मुक्त रखता है और आपकी उत्पादकता को बढ़ाता है।

बुलंद ईरादेः सफलता का इंजन

एक बुलंद ईरादा ही आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। मुश्किलों के बावजूद अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित रखें और कभी हार न मानें। एक बुलंद इरादा आपको सफलता की ओर ले जाता है और आपको अपने सपनों को साकार करने में मदद करता है।

इन तीनों स्तंभों को कैसे मजबूत करें?

- **नियमित व्यायामः** रोजाना कुछ समय व्यायाम के लिए निकालें।
- **संतुलित आहारः** पौष्टिक आहार लें।
- **पर्याप्त नींदः** रोजाना 7-8 घंटे की नींद लें।
- **ध्यानः** रोजाना कुछ मिनट ध्यान करें।
- **योगः** योगासन आपके शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखते हैं।
- **सकारात्मक सोचः** सकारात्मक सोच आपको सफलता की ओर ले जाएगी।
- **लक्ष्य निर्धारणः** स्पष्ट और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारित करें।
- **अनुशासनः** अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुशासन का पालन करें।

निष्कर्षः

स्वस्थ शरीर, शांत दिमाग और बुलंद ईरादे सफलता के तीन महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इन तीनों का संतुलन बनाकर आप एक खुशहाल और सफल जीवन जी सकते हैं। आज ही इन तीनों स्तंभों पर काम करना शुरू करें और अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएं!

सबका विकास, सबका प्रयास और सबका साथ के साथ चल रही साय सरकार

-संवाददाता

जगत प्रवाह, रायपुर। सबका विकास, सबका प्रयास और सबका साथ के साथ साय सरकार चल रही है। प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आगे बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने जिस संकल्प के साथ विकसित भारत की प्रतिबद्धता जाहिर की उसी लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए छत्तीसगढ़ में भी जनहित कार्यों का सिलसिला लगातार आगे बढ़ रहा है। केन्द्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्य में विष्णुदेव साय के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार में छत्तीसगढ़ की जनता को दोहरा लाभ मिल रहा है। साय सरकार में गुणवत्ता, जवाबदेही और पारदर्शिता के तीन कार्यस्तम्भ के जरिए लोगों तक सुशासन का संदेश जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में संचालित योजनाओं का छत्तीसगढ़ को भरपूर लाभ मिल रहा है। केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाओं के क्रियान्वयन और उनका लाभ पात्र हितग्राहियों को दिलाने में छत्तीसगढ़ लगातार अग्रणी भूमिका की ओर बढ़ रहा है। जिनमें पीएम आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, आयुष्मान भारत योजना, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन जैसी योजनाएं शामिल हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना में छत्तीसगढ़ को केंद्र सरकार से पूरे देश में सर्वाधिक 8.46 लाख आवास निर्माण का लक्ष्य मिला है। मोदी जी की गारंटी के अनुरूप 18 लाख 12 हजार 743 जरूरतमंद परिवारों को प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति के साथ ही मुख्यमंत्री आवास योजना ग्रामीण के तहत सर्वे के पात्र 47 हजार 90 आवासहीन परिवारों को भी पक्का मकान दिया जाएगा। छत्तीसगढ़ में अब तक

पीएम आवास योजना ग्रामीण में 01 लाख 74 हजार 585 हितग्राहियों को उनका आवास मिल चुका है। प्रदेश में पिछड़ी जनजाति समुदाय के लोगों को पीएम जनमन योजना का भी लाभ मिल रहा है। इस योजना के अंतर्गत अब तक प्रदेश में विशेष पिछड़ी जनजातियों के 24 हजार 542 परिवारों को आवास की स्वीकृति मिल चुकी है। प्रदेश में केंद्र सरकार के द्वारा 1 हजार 699 करोड़ की स्वीकृति से 2 हजार 449 किलोमीटर की 715 सड़कों का निर्माण भी किया जाएगा, जिनसे 777 पीव्हीटीजी बसाहटें लाभान्वित होगी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी छत्तीसगढ़ की तस्वीर बदल रही है। प्रदेश में लोगों को गुणवत्तापूर्ण आधुनिक स्वास्थ्य व्यवस्था का लाभ मिल रहा है, इस उपलब्धि के लिए भारत द्वारा छत्तीसगढ़ के राज्य के 266 सरकारी अस्पतालों को क्वालिटी सर्टिफिकेशन भी दिया है। छत्तीसगढ़ में 11 लाख 20 हजार से ज्यादा मरीज आयुष्मान कार्ड से लाभान्वित हुए हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत प्रदेश में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए दिसम्बर 2023 से नवम्बर 2024 तक 883 संविदा पदों पर नियुक्ति भी दी गई है। डबल इंजन की सरकार में छत्तीसगढ़ में विकास की रफ्तार भी डबल हो गई है। प्रधानमंत्री सड़क योजना के अंतर्गत बस्तर संभाग के नक्सल प्रभावित दूरस्थ इलाकों में 103 किलोमीटर लम्बाई की सड़कें बन चुकी हैं, इनमें 616 सड़कों के नवीनीकरण का कार्य भी जारी है। जल जीवन मिशन के अंतर्गत 4500 करोड़ रूपए के प्रावधान के साथ ही छत्तीसगढ़ के 50 लाख परिवारों तक शुद्ध पेयजल पहुँचाने का लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए 40 लाख परिवारों तक नल कनेक्शन पहुंचा दिया गया है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ के चार प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिए 11 हजार करोड़ रूपए की मंजूरी भी मिल चुकी है। उरगा-कटघोरा बाईपास, बसना से सारंगढ़ (माणिकपुर) फीडर रूट, सारंगढ़ से रायगढ़ फीडर रूट और रायपुर-लखनादोन इकॉनोमिक कॉरिडोर के लिए भी केन्द्र से स्वीकृति मिल चुकी है, 236.1 किलोमीटर की कुल लम्बाई वाले इस कॉरिडोर को 9208 करोड़ रूपए की लागत बनाया जाएगा। केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी ने छत्तीसगढ़ में 20 हजार करोड़ रूपए के विकास कार्यों को भी मंजूरी दी है। मुख्यमंत्री की पहल पर छत्तीसगढ़ को पीएम ई-बस सेवा योजना के तहत केंद्र सरकार द्वारा 240 ई-बसों की स्वीकृति भी मिली है, ये बसें रायपुर, बिलासपुर, कोरबा और दुर्ग-भिलाई में चलेंगी। इस सुविधा से आम लोगों को सस्ती दर में परिवहन की सुविधा मिलेगी। छत्तीसगढ़ के किसानों तक केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का दोहरा फायदा पहुंच रहा है, किसान अपनी सुविधा से अधिकतम 5 लाख तक अल्पकालीन कृषि ऋण भी ले सकते हैं। मोदी जी की गारंटी पर मुख्यमंत्री की पहल से छत्तीसगढ़ के किसानों को उनके धान का देश में सबसे उच्चतम मूल्य मिल रहा है।

अति उपभोग वास्तव में एक वैश्विक संकट है

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशांत सिन्हा
पर्यावरणविद्

अति उपभोग वास्तव में एक वैश्विक संकट है, जिसका प्रभाव हमारे पर्यावरण, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर पड़ा है। हमने तकनीकी और औद्योगिक प्रगति के जरिए अपने जीवन को पहले से कहीं ज्यादा आरामदायक और आसान बना लिया है। हमारी आधुनिक जीवनशैली ने हमें हर वह सुविधा दी है जिसकी हमने कभी कल्पना की थी। लेकिन इस प्रगति की एक बड़ी कीमत हम चुका रहे हैं। यह कीमत है अति उपभोग—एक ऐसी आदत, जो धीरे-धीरे न केवल हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही है बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को भी खतरे में डाल रही है। अति उपभोग का सीधा अर्थ है प्राकृतिक संसाधनों और वस्तुओं का आवश्यकता से अधिक उपयोग। यह केवल हमारे आस-पास के पर्यावरण को नहीं बल्कि हमारे समाज, हमारी अर्थव्यवस्था और यहां तक कि हमारे स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। यदि हम इसे नहीं रोकते, तो इसका प्रभाव इतना गहरा और व्यापक होगा कि मानव सभ्यता के अस्तित्व पर ही सवाल खड़ा हो जाएगा।अति उपभोग के पीछे कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है उपभोक्तावाद। आधुनिक समय में सफलता और खुशी को भौतिक वस्तुओं से जोड़ा जाने लगा है। महंगे कपड़े, नए गैजेट, बड़ी कारें, और विलासितापूर्ण जीवनशैली अब केवल विकल्प नहीं हैं; वे हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक बन गए हैं। विज्ञापन, सोशल मीडिया, और ब्रांडिंग हमें यह यकीन दिलाते हैं कि जितनी अधिक चीजें हम खरीदेंगे, उतना ही बेहतर जीवन हमारा होगा। इस अंधाधुंध उपभोग को बढ़ावा देने में कंपनियों और बाजारों की बड़ी भूमिका है। इसके अलावा, जनसंख्या वृद्धि ने संसाधनों पर दबाव को और बढ़ा दिया है। एक ओर जहां विकासशील देशों की बढ़ती आबादी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रही है, वहीं विकसित देश अति उपभोग में डूबे हुए हैं। शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने इस समस्या को और बढ़ावा दिया है। शहरों में बड़े पैमाने पर निर्माण और ऊर्जा खपत, औद्योगिक कचरे का उत्पादन, और कच्चे माल की मांग ने प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया है। अंततः, हमें यह समझना होगा कि अति उपभोग केवल एक पर्यावरणीय समस्या नहीं है; यह एक नैतिक और सामाजिक चुनौती भी है। यह हमारे अस्तित्व का प्रश्न है। यदि हम समय रहते नहीं चेते, तो इसके परिणाम विनाशकारी होंगे। हमें अपने उपभोग के तरीकों को पुनः परिभाषित करना होगा। एक ऐसा भविष्य बनाना होगा जो न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित और समृद्ध हो। हर छोटी कोशिश, चाहे वह ऊर्जा बचाने की हो, कचरे को कम करने की हो, या पेड़ों को बचाने की, एक बड़ा बदलाव ला सकती है। हमारे पास अभी भी समय है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम अपने संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करें और इस संकट को टालने के लिए सामूहिक प्रयास करें। आइए, हम सब मिलकर एक बेहतर और टिकाऊ भविष्य की ओर कदम बढ़ाएं।

RO No : 13057/195

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। संपादक : विजया पाठक।
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)